परमात्मा उनसे भिन्न नहीं है। जीव-हृदय में परमात्मा रूपधारी श्रीभगवान् जीवात्मा के कार्यकलाप के साक्षी और चेतना के स्रोत हैं। जीव को स्वतन्त्रतापूर्वक क्रिया करने का अवसर देकर परमात्मा उसके कार्यकलाप की समीक्षा करते हैं। परमेश्वर श्रीकृष्ण की इन विविध अभिव्यक्तियों के कार्य भगवद्भक्तियोग में लगे शुद्ध कृष्णभावनाभावित भक्त के लिए अपने-आप स्पष्ट हो जाते हैं। **अधिदैव** नामक प्रभु का विराट् रूप उन नवदीक्षितों के लिए है, जो परमेश्वर के परमात्मा रूप को नहीं जानते। नवदीक्षित भक्त के लिए उसी विराट् रूप के ध्यान का विधान है, जिसके निम्न लोक चरण हैं, शशि-सूर्य जिसके चक्षु हैं तथा उच्च लोकों को जिसका शीर्ष भाग माना जाता है।

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः।।५।।

अन्तकाले=जीवन के अन्त में; **च**=भी; **माम्**=मेरा; **एव**=ही; **स्मरन्**=स्मरण करता हुआ; **मुक्त्वा**=त्याग कर; **कलेवरम्**=शरीर को; **यः**=जो; **प्रयाति**=जाता है; **सः**=वह; **मद्भावम्**=मेरे स्वभाव को; **याति**=प्राप्त होता है; **न**=नहीं; **अस्ति**=है; **अत्र**=इसमें; **संशयः**=सन्देह।

अनुवाद

जो कोई अन्तकाल में मेरा स्मरण करता हुआ देह को त्यागता है, वह तत्काल मेरे स्वभाव को प्राप्त हो जाता है—इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।।५।।

तात्पर्य

इस श्लोक में कृष्णभावनामृत का माहात्म्य प्रकट हुआ है। कृष्णभावनाभावित दशा में देह त्यागने वाला बिना विलम्ब दिव्य भगवद्धाम में प्रविष्ट हो जाता है। **स्मरन्** शब्द महत्त्वपूर्ण है। श्रीकृष्ण का स्मरण उस अशुद्ध जीव को नहीं हो सकता, जिसने कृष्णभावनाभावित भक्तियोग का सम्पादन न किया हो। श्रीकृष्ण की शाश्वत् स्मृति के लिए श्रीचैतन्य महाप्रभु का अनुगमन करते हुए वृक्ष से भी अधिक सहनशील और तृण से भी अधिक दीन होकर, दूसरों को पूरा सम्मान देते हुए और अपने लिए मान की इच्छा न रखकर **हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे**—इस महामन्त्र का निरन्तर कीर्तन करना चाहिए। ऐसा करने वाला सफलतापूर्वक श्रीकृष्ण का स्मरण करता हुआ देह से प्रयाण कर परम लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।।६।।

यम् यम्=जिस; **वा**=किसी; **अपि**=भी; **स्मरन्**=स्मरण करते हुए; **भावम्**=प्रकृति का; **त्यजति**=त्यागता है; **अन्ते**=अन्त में; **कलेवरम्**=शरीर को; **तम् तम्**=उसको; **एव**=ही; **एति**=प्राप्त होता है; **कौन्तेय**=हे कुन्तीपुत्र; **सदा**=नित्य; **तत्**=उस; **भाव**=भाव का; **भावितः**=स्मरण करता हुआ।